भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

हमारे आस–पास में रहने वाले लोग विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं जैसे–

1– कृषि कार्य, पषुपालन, मधुमक्खी पालन, लकडी चीरना, फल संग्रह करना, मत्स्ययन आदि। (प्राथमिक क्षेत्रक)।

2– कुटीर उद्योगों में जुलाहे के रूप में काम करना, सूती, ऊनी, रेषमी वस्त्र मिलों में काम करना, चीनी उद्योग, गुड़ व खांडसारी उद्योग, रेलवे, जहाजरानी व इंजीनियरिंग उद्योग आदि 1 (द्वितीयक क्षेत्रक)।

3– विभिन्न व्यवसाय जैसे चिकित्सक, वकील, अध्यापक, टेलीफोन ऑपरेटर, बैंकिंग व बीमा कम्पनियों में काम करना, परिवहन व संचार सेवाओं में काम करना, सॉफ्टवेयर व कम्प्यूटर से जुड़े कर्मचारी, क्लर्क, सिपाही, सैनिक आदि (तृतीयक क्षेत्रक)

प्राथमिक क्षेत्रक–कृषि,पषुपालन आदि,द्वितीयक क्षेत्रक–औद्योगिक क्षेत्र, तृतीयक क्षेत्रक –सेवा क्षेत्र।

प्राथमिक क्षेत्र– जब हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं तो इसे प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधि कहते हैं। जैसे– कपास एक प्राकृतिक उत्पाद है। दूध भी प्राकृतिक उत्पाद है, खनिज और अयस्क भी प्राकृतिक उत्पाद हैं। इसलिए इस क्षेत्रक को कृषि एवं सहायक क्षेत्रक भी कहते हैं।

द्वितीयक क्षेत्रक– अर्थात् औद्योगिक क्षेत्रक। प्राथमिक क्षेत्रक में उत्पादित वस्तुओं का उद्योगों में रूप परिवर्तित कर उसकी उपयोगिता बढ़ाई जाती है।

द्वितीयक क्षेत्रक– (औद्योगिक क्षेत्रक) प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के जरिए अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है अर्थात् कृषि उत्पादित कपास का यदि उद्योगों में कपड़ा बनता है तो यह द्वितीयक क्षेत्रक का कार्य है। प्राथमिक क्षेत्रक में उत्पादित गन्ने की औद्योगिक (द्वितीयक क्षेत्रक) में चीनी बनाना इस क्षेत्रक के कार्य हैं।

तृतीयक क्षेत्रक–(सेवा क्षेत्रक) ये गतिविधियां प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती हैं। ये गतिविधियां स्वतः वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती हैं बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग या मदद करती हैं जैसे–प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बेचने के लिए ट्रकों,

ट्रेनों द्वारा परिवहन करने की जरूरत पड़ती हैं व हम तक पहुंचाया जाता है इस कार्य में लगे लोग सेवा क्षेत्रक(तृतीयक क्षेत्रक) में आये, संचार व्यापार, बैंक, डॉक्टर की सेवाऐं, अध्यापक की सेवाऐं, सैनिक, सभी प्रकार के दुकानदारों की सेवाऐं, धोबी, नाई, वकील इसके अन्तर्गत आते हैं।

इसमें नवीन सेवाऐं जैसे– इंटरनेट, कैफे, ए0टी0एम0, बूथ, कॉल सेंटर, सॉफ्टवेयर कम्पनी आदि भी महत्वपूर्ण हैं।

तीनों क्षेत्रकों की आपस में निर्भरता

उदाहरण–प्राथमिक क्षेत्रक–कृषि क्षेत्रक में गन्ने का उत्पादन किया जाता हैं।

द्वितीयक क्षेत्रक–औद्योगिक क्षेत्रक में चीनी बनाई जाती है।

तृतीयक क्षेत्रक–सेवा क्षेत्रक–परिवहन द्वारा, ट्रकों द्वारा, भण्डारग्रहों, दुकानों में चीनी पहुँचाई जाती है। दुकानदार द्वारा हम तक पहुँचाई जाती हैं।

इसी प्रकार सभी वस्तुऐं तीनों क्षेत्रकों के सहयोग से उत्पादित होती हैं।

आर्थिक गतिविधियों के उदाहरण–

कल्पना करें कि यदि किसान किसी चीनी मिल को गन्ना बेचने से इंकार कर दे तो क्या होगा? मिल बंद हो जाऐंगी, चीनी का संकट हो जाऐगा। प्राथमिक क्षेत्रक , द्वितीयक क्षेत्रक, तृतीयक क्षेत्रक एक–दूसरे पर निर्भर हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक एवं सकल घरेलू उत्पाद– देष की अर्थव्यवस्था(धन की व्यवस्था) इन्हीं तीन क्षेत्रकों पर निर्भर है। पूरे देष में जो भी उत्पादन होता है (कार्य होते हैं) इन्हीं तीनों आर्थिक क्रियाओं में होते हैं।

इन तीनों क्षेत्रकों द्वारा वर्ष में जो भी उत्पादन होता है, उसका योग सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है। किसी विषेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य, उस वर्ष में क्षेत्रक के कुल उत्पादन की जानकारी प्रदान करता है।

तीनों क्षेत्रकों के उत्पाद का योगफल देष का सकल घरेलू उत्पाद(जी0डी0पी0) कहलाता है।

यदि देष में सभी क्षेत्रकों में उत्पादन अच्छा होगा तो सकल घरेलू उत्पाद बढ़ेगा व अर्थव्यवस्था विकसित होगी।

उदाहरण– भारत में प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक क्षेत्रकों द्वारा सकल घरेलू उत्पादन

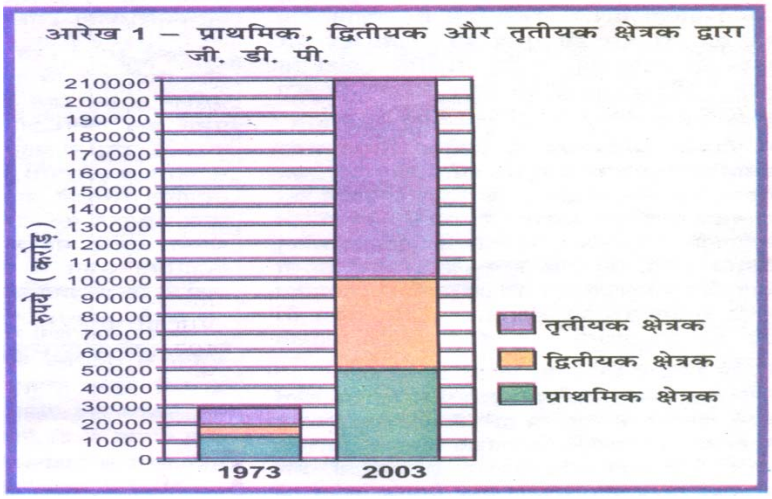

1973 में जी0डी0पी0 में प्राथमिक क्षेत्रक का योगदान सबसे अधिक था। द्वितीयक क्षेत्रक का स्थान तीसरा था जबकि तृतीयक क्षेत्रक का स्थान दूसरा था । 2003 में स्थिति बदल गई। इस वर्ष जी0डी0पी0 में तृतीयक क्षेत्रक का योगदान सर्वाधिक था। द्वितीय स्थान प्राथमिक क्षेत्रक का था तथा द्वितीयक क्षेत्रक का योगदान सबसे कम था। भारत में तृतीय क्षेत्रक वर्तमान में भी अन्य क्षेत्रकों से आगे है क्योंकि यह क्षेत्रक विविध बुनियादी सेवाऐं उपलब्ध कराता है। जैसे–षिक्षा, संचार, परिवहन, व्यापार, बैंकिंग आदि।

1– तृतीयक क्षेत्रक विविध बुनियादी सेवाएं उपलब्ध कराता है। चिकित्सालय, शैक्षणिक संस्थाएं, डाक एवं तार सेवा आदि। जिसके प्रबन्धन की जिम्मेदारी सरकार की होती है।

2– लोगों की आय जैसे–जैसे बढ़ रही है वैसे–वैसे नई सेवाओं की मांग भी बढ़ने लगी है, जैसे– रेस्तूरा, पर्यटन, निजी चिकित्सालय, निजी विद्यालय, द्रुत परिवहन आदि।

3– सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवायें महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य होती जा रही हैं।

4– छोटी– मोटी सेवाओं में लगे लोगों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।

रोजगार में क्षेत्रकों की हिस्सेदारी

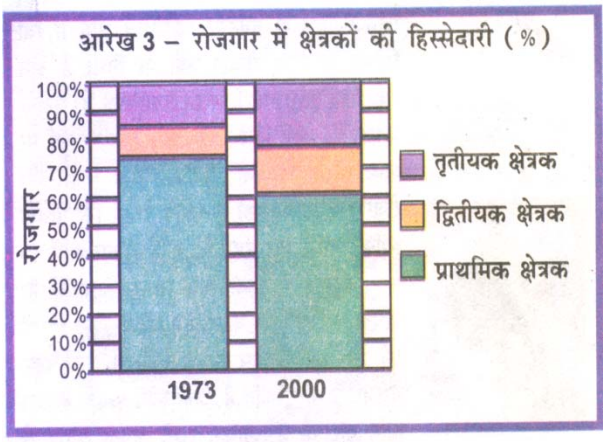

तीनों क्षेत्रकों में सर्वाधिक रोजगार कौन प्रदान करता है उक्त आरेख द्वारा स्पष्ट है–
रोजगार में क्षेत्रकों की हिस्सेदारी प्रतिषत में–

वर्ष 1973 में प्राथमिक क्षेत्रक अत्यधिक रोजगार दे रहा था उसके बाद तृतीयक क्षेत्रक व अन्त में द्वितीयक क्षेत्रक। वर्ष 2000 में भी इसी क्रम में रोजगार दिया गया। परन्तु प्राथमिक क्षेत्रक के रोजगार का सृजन पहले से कम हुआ। द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रक में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। वर्तमान में भी तृतीयक व द्वितीयक क्षेत्रक अधिक रोजगार प्रदान कर रहे हैं।

संगठित व असंगठित के रूप में क्षेत्रकों का विभाजन–

आर्थिक कार्यों के विभाजन का एक अन्य तरीका भी है। इसमें लोगों के काम के प्रकार व काम की शर्तें क्या हैं?
संगठित व असंगठित क्षेत्रकों को कान्ता व कमल की कहानी के माध्यम से समझते हैं–
"कान्ता एक कार्यालय में कार्य करती है वह सुबह साढ़े नौ से सांय साढ़े पांच तक कार्यालय में रहती है। वह नियमित रूप से प्रत्येक माह के अन्त में अपना वेतन पाती है। वेतन के अतिरिक्त वह सरकारी नियमों के तहत भविष्य निधि भी प्राप्त करती है। उसे चिकित्सीय व अन्य भत्ते भी मिलती है। कान्ता रविवार को कार्यालय नहीं जाती है। इस दिन सवेतन अवकाष होता है। उसने जब नौकरी आरम्भ की थी तब उसे एक नियुक्ति पत्र भी दिया गया था। जिसमें नौकरी संबंधी निबंधन और शर्तों का उल्लेख किया गया था, कान्ता संगठित क्षेत्रक में कार्य करती थी।"
"कमल कान्ता का पड़ोसी है वह नजदीक के किराना दुकान में दैनिक मजदूरी करने वाला श्रमिक है। वह सुबह साढ़े सात बजे दुकान पर जाता है और सांय आठ बजे तक कार्य करता है। उसे अपनी मजदूरी के अतिरिक्त अन्य कोई भत्ता नहीं मिलता है। जिस दिन वह कार्य नहीं करता है उस दिन की मजदूरी उसे नहीं मिलती है। उसे कोई औपचारिक पत्र भी नहीं मिला है जिसमें दुकान में नियुक्ति के बारे में कहा गया हो। उसका नियोक्ता उसे किसी भी समय उसे काम से हटने के लिए कह सकता है। कमल असंगठित क्षेत्रक में कार्य करता है।"
संगठित क्षेत्रक व असंगठित क्षेत्रक में अन्तर

संगठित क्षेत्रक

1 कान्ता संगठित क्षेत्रक में कार्य करती है संगठित क्षेत्रक में वे कार्य आते हैं जहां रोजगार की अवधि नियमित होती है। ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं।

2– काम के घंटे निष्चित होते हैं।

3– रोजगार सुरक्षित होता है।

4– निष्चित वेतन मिलता है।

5– अवकाष देय होता है।

6–चिकित्सा अवकाष मिलता है।

7– इनका बीमा भी होता है, तथा इन्हें पेंषन भी मिलती है।

8– इन्हें सवेतन छुट्टी मिलती है। इसके अन्तर्गत सरकारी कर्मचारी, डॉक्टर, वकील, अध्यापक, बैक कर्मी आदि आते हैं।

असंगठित क्षेत्रक

1– कमल असंगठित क्षेत्रक में कार्य करता है।

2– असंगठित क्षेत्रक छोटी–छोटी बिखरी इकाइयों, जो अधिकांषतः सरकारी नियंत्रण से बाहर होती हैं।

2– इनमें रोजगार की सुरक्षा नहीं होती। इन्हें कभी भी रोजगार से निकाला जा सकता है।

3– इनका वेतन निष्चित नहीं होता।

4–इन्हें रविवार का अवकाष प्राप्त नहीं होता तथा चिकित्सा अवकाष भी प्राप्त नहीं होता।

5– बीमा व पेंषन की सुविधा भी इन्हें प्राप्त नहीं होती।

6– इसके अन्तर्गत भूमिहीन कृषि श्रमिक, छोटे किसान, बुनकर, लुहार, बढ़ई, सुनार मजदूर, व्यापार एवं परिवहन में कार्यरत श्रमिक, सड़क पर कार्य करने वाले विक्रेता, सिर पर बोझा ढोने वाले श्रमिक, वस्त्र निर्माण करने वाले श्रमिक आदि आते हैं।

असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों का संरक्षण

असंगठित क्षेत्रक में बहुत अधिक श्रमिक लगे हैं जो बहुत कम वेतन पाते हैं व अन्य सुविधाओं जैसे स्वास्थ्य, बीमा, चिकित्सा आदि से वंचित हैं इनका संरक्षण आवष्यक है। इस क्षेत्रक में और अधिक रोजगार की आवष्यकता है श्रमिकों को संरक्षण व सहायता की आवष्यकता है। भारत में लगभग 80% ग्रामीण परिवार छोटे और सीमान्त किसानों की श्रेणी में आते हैं। इन किसानों को समय से बीज, कृषि उपकरण, साख , भण्डारण की सुविधा और विपणन केन्द्र की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध कराने की जरूरत है।

शहरी क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्रक मुख्यतः लघु उद्योगों के श्रमिकों, निर्माण, व्यापार, परिवहन आदि श्रमिक आते हैं। लघु उद्योगों को भी कच्चे माल की प्राप्ति और उत्पाद के विपणन के लिए सरकारी मदद की आवष्यकता होती है। आकस्मिक श्रमिकों को शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में संरक्षण दिए जाने की जरूरत है।

अतः आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को संरक्षण और सहायता अनिवार्य है।

स्वामित्व आधारित क्षेत्रक– सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक

आर्थिक गतिविधियों को क्षेत्रकों में वर्गीकृत करने का एक अन्य तरीका यह है कि परिसंपत्तियों का स्वामी और सेवाओं की उपलब्धता के लिए जिम्मेदार कौन है?

सार्वजनिक क्षेत्रक–

अधिकांष परिसंपत्तियों पर सरकार का स्वामित्व होता है। और सरकार ही सभी सेवायें उपलब्ध कराती हैं।

सार्वजनिक क्षेत्रकों के उदाहरण– रेलवे, डाकघर, भारत संचार निगम, प्रतिरक्षा सामाग्री से जुडे उद्योग आदि।

निजी क्षेत्रक में परिसम्पत्तियों पर स्वामित्व और सेवाओं की जिम्मेदारी एकल व्यक्ति या कम्पनी के हाथों में होती है।

निजी क्षेत्रकों के उदाहरण– टाटा आयरन एंड स्टील कम्पनी, रिलाइन्स, बजाज आदि।

सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों की तुलना–

तुलना का आधार	निजी क्षेत्रक	सार्वजनिक क्षेत्रक
स्वामित्व	निजी क्षेत्रक में उद्योगों पर किसी व्यक्ति विषेष, समूह अथवा कम्पनी का स्वामित्व होता है। जैसे– टिस्को, मोदी टायर्स, बजाज स्कूटर्स, रिलाइन्स आदि।	इसमें उद्योगों पर राज्य अथवा सरकारी एजेंसियों का स्वामित्व होता है। जैसे– डाक घर, रेलवे, आकाषवाणी आदि।
निर्णय–	निजी क्षेत्रक में उत्पादन, विपणन सम्बन्धी निर्णय निजी स्वामियों, प्रबन्धकों द्वारा लिये जाते हैं।	इस क्षेत्रक में उत्पादन, वितरण संबंधी निर्णय सरकार द्वारा निर्धारित नीति के अन्तर्गत किये जाते हैं।
उद्देष्य–	निजी क्षेत्रक का मुख्य उद्देष्य अधिकतम लाभ कमाना होता है।	सार्वजनिक क्षेत्रक का उद्देष्य अधिकतम लाभ कमाना न होकर जन सामान्य को उनकी आवष्यकता की वस्तुऐं उपलब्ध कराना होता है।

राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम–2005

d{kk 10 lkekftd foKku

राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम–2005 का उद्देष्य चयनित जिलों में ग्रामीण क्षेत्रों के प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को वर्ष में कम से कम 100 दिन अकुषल श्रम वाले रोजगार की गारंटी देना है। 2 अक्टूबर 2009 में इसका नाम बदलकर महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम कर दिया गया है। राज्यों में कृषि श्रमिकों के लिए लागू वैधानिक न्यूनतम मजदूरी का भुगतान इसके लिए किया जाएगा।

इसके अन्तर्गत 33% लाभ भोगी महिलाएं होंगी। योजना के इच्छुक एवं पात्र व्यक्ति द्वारा 15 दिन के भीतर रोजगार न दिये जाने पर निर्धारित दर से बेरोजगारी भत्ता सरकार द्वारा दिया जाएगा। इस प्रकार यह अधिनियम रोजगार की वैधानिक गारंटी प्रदान करता है। इस कार्यक्रम द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगार मिलने के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्र का विकास भी हो रहा है।

महत्वपूर्ण प्रष्न–

1– संगठित एवं असंगठित क्षेत्रक में रोजगार परिस्थितियों का वर्णन कीजिए?

2– असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों के संरक्षण के उपाय लिखिए?

3– संगठित और असंगठित क्षेत्रकों की रोजगार परिस्थितियों का तुलनात्मक वर्णन कीजिए?

4– उदाहरण देकर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों की तुलना कीजिए?

5– रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर आर्थिक गतिविधियों को कैसे वर्गीकृत किया जा सकता है?

6– महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम(मनरेगा) 2005 को सविस्तार समझाइये?